Vol 2 Issue 12 Sept 2013 ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Osmar Siena
Brazil

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 2, Issue. 12, Sept. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.reviewofresearch.net

ORIGINAL ARTICLE

छायावादी काव्य संवेदना : एक विवेचन

अजीत कुमार द्विवेदी

सार :

काव्य मनुष्य के सुख–दुःखात्मक संवेदनाओं की कथा है तथा संवेदना काव्य का प्राण है, जहाँ तक छायावादी काव्य संवेदना की बात है, इसमें पुराने कथानकों को भी वर्तमान परिदृश्य में रखकर संवेदना को मानव हितार्थ प्रस्तुत किया गया है। छायावादी रचना का कल्पनालोक यथार्थ के धरातल से जुड़ा हुआ है। छायावादी कवियों ने व्यक्तिगत वेदना को समाज से जोड़कर रागात्मक ढंग से व्यक्त किया है।

छायावादी हिन्दी साहित्य परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। छायावादी काव्य अपने में विविधता लिए हुए है। प्रसाद, निराला पंत एवं महादेवी वर्मा की रचनाओं में समाज की सभी परिस्थितियों का समुचित चित्रण मिलता है।

छायावादी काव्य, संवेदना के स्तर पर अपनी अमिट छाप रखता है। छायावादी कवियों ने एक ओर प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया, तो दूसरी ओर प्रकृति में संवेदना को खोजा। इसी तरह एक ओर जहाँ प्रणयानुभूति को व्यक्त किया गया तो दूसरी ओर विरह की रहस्यपरक अनुभूति भी कराई। निष्कर्षतः छायावादी काव्य प्रकृति तथा मानव के उदात्त रूप की झाँकी व्यक्त करता है।

प्रस्तावना :

काव्य मनुष्य के सुख–दुःखात्मक संवेदनों की कथा है और संवेदना काव्य का प्राण तत्व है। "वस्तुतः काव्य, बुद्धि के आलोक में संवेदनाओं का संप्रेषण है। मानव के जितने सृजन हैं, कविता उनमें सबसे अधिक रहस्यमय सृजन है, जिसमें उसके अन्तःकरण का संगठन करने वाले सभी अवयव यथा मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार एक साथ सामंजस्यपूर्ण स्थिति में कार्य करते हैं।"[1]

काव्य के लिए वे ही संवेदन महत्वपूर्ण हैं जो जीवन यात्रा में नये–नये रूपों में परिवर्तित और संस्कृत होते चले आ रहे हैं। जहाँ तक छायावादी काव्य संवेदना की बात है, इसमें पुराने कथानकों को भी वर्तमान परिदृश्य में रखकर संवेदना को मानव हितार्थ प्रस्तुत किया गया है।

छायावादी रचना में कल्पना का बाहुल्य है, लेकिन इसे यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें यथार्थ का सम्पुट नहीं है। छायावादी रचना का कल्पनालोक, यथार्थ के धरातल से जुड़ा है, उसका मूल पृथ्वी पर ही है। जैसे आकाश में उड़ने वाली पतंग का मूल धरती पर खड़े बच्चे के हाथ का होता है।

एक बात और है कि छायावादी कवियों ने व्यक्तिगत वेदना को भी अपने साहित्य में स्थान दिया है। इसके साथ ही अपनी कविता में रहस्य भावना का भी समावेश किया है। छायावादी काव्य में प्रकृति का मानवीकरण भी पर्याप्त हुआ है। प्रकृति के साथ मनुष्य के सुखात्मक एवं दुःखात्मक अनुभूतियों का तादात्म्य स्थापित किया गया है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर ही वह अपना सर्वांगीण विकास करता है। कवि भी समाज का एक भावुक प्रतिनिधि होता है, जो सबकी वेदना से द्रवित होता है और रागात्मक ढंग से संवेदनाओं का प्रेषण करता है। यही कार्य छायावादी काव्य के सभी रचनाकारों ने भी किया।

विवेचन :

छायावाद हिन्दी साहित्य इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। छायावादी काव्य अपने में विविधता लिए हुए है। इसकी समय सीमा सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों को आत्मसात किये हुए है। इसके साथ ही कवियों की रहस्य भावना एवं कल्पना का समन्वय भी है। छायावाद में कवियों का वैयक्तिक सुख–दुःख भी पूरी सजीवता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। कहीं–कहीं कवियों की वेदना लौकिक से अलौकिक की ओर उन्मुख हो गई है। इतना ही नहीं कवियों की आम जनता के प्रति संवेदना भी गहरी मानवीयता के स्तर पर व्यक्त हुई है।

महाकवि निराला ने अपनी 'तोड़ती पत्थर' कविता में एक मजदूरनी युवती द्वारा धूप में बैठकर पत्थर तोड़ने पर अपनी मार्मिक संवेदना व्यक्त की, जिसमें पूँजीपतियों की निर्दयता पर प्रहार किया गया है; क्योंकि काम करना बुरा नहीं लेकिन तरीका गलत है। क्या यही कार्य छायादार स्थल पर नहीं कराया जा सकता –

"देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,

सुनी मैनें वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह कांपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर''[2]

इसी प्रकार निराला जी ने अपनी 'भिक्षुक' कविता में भूख की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त किया गया है–

''चाट रहे झूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।''[3]

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी एक कविता में दीन–दुखियों पर ईश्वर से करूणा बरसाने की प्रार्थना की है।

''दलित जन पर करो करूणा।
दीनता पर उतर आये।
प्रभु तुम्हारी शक्ति अरूणा।''[4]

निराला जी ने 'विधवा' कविता में विधवा नारी को सम्मानित एवं पवित्र भाव में व्यक्त किया है।

''वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी
वह दीप–शिखा–सी शांत भाव में लीन,
वह क्रूर काल–ताण्डव की स्मृति– रेखा–सी,
वह टूटे तरू की छुटी लता–सी दीन–
दलित भारत की ही विधवा है।''[5]

महादेवी वर्मा विश्व व्यापी दुःखों एवं पीड़ा को अपने निम्नांकित गीत में अत्यधिक मार्मिकता एवं सजीवता के साथ चित्रित किया है, जो उनकी स्वानुभूत वेदना का उज्जवल प्रतीक है।

''मैं नीर भरी दुःख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।''[6]

जयशंकर प्रसाद जी ने यह अनुभव किया कि सामाजिक जीवन में विषमता बहुत व्याप्त है। इस विषमता के कारण ही परस्पर ईर्ष्या–द्वेष की भावना उत्पन्न होती है, इसी से ऊँच–नीच का भाव पैदा होता है और इसी के परिणामस्वरूप मनुष्य सुखी एवं दुःखी होते हैं। यह ऐसी पीड़ा है जो समूचे जगत में व्याप्त है।

''विषमता की पीड़ा से व्यस्त,
हो रहा स्पंदित विश्व महान।
यही दुख सुख विकास का सत्य
यही भूमा का मधुमय दान।''[7]

इसी तरह प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने अपनी 'परिवर्तन' नामक कविता में कहा कि जहाँ प्रकृति मानव के साथ संवेदना व्यक्त करती हुई मनुष्य के खुशियों के क्षणों में प्रसन्नता व्यक्त करती है, वहीं उसके दुःख के क्षणों में अश्रुपूरित भी हो जाती है:

''अचिरता देख जगत की आप
शून्य भरता समीर निःश्वास,
डालता पातों पर चुपचाप
ओस के आँसू नीलाकाश;
सिसक उठता समुद्र का मन
सिहर उठते उड़गन!''[8]

संवेदना की अगली कड़ी में पंत जी ने अपनी 'ताज' नामक कविता में स्पष्ट घोषणा करते हुए कहा है कि जब संसार में लोग भूखे, नंगे एवं बेघर हों, तब 'ताजमहल' जैसे स्मारक बनाने की क्या आवश्यकता है? जीवित प्राणी रोटी, कपड़ा और मकान के लिए तरसे और मृत लोगों के लिए संगमरमर के भव्य स्मारक बनाये जायें, यह न्यायोचित नहीं है।

''हाय! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिव पूजन?
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।
स्फटिक सौंध में हो श्रृंगार मरण का शोभन,
नग्न क्षुधातुर वास विहीन रहें जीवित जन?''[9]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि छायावादी काव्य, संवेदना के स्तर पर भी अपनी अमिट छाप रखता है। छायावादी कवियों ने एक ओर प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया, तो दूसरी ओर प्रकृति में संवेदना भी खोजा इसी तरह एक ओर जहाँ प्रणयानुभूति को व्यक्त किया तो

दूसरी ओर विरह की रहस्यपरक अनुभूति भी कराई। निष्कर्षतः छायावादी काव्य मनुष्य तथा प्रकृति के उदात्त एवं आकर्षक रूप की झाँकी है।

4. उपसंहार :

छायावादी काव्य संवेदना समाज में व्याप्त दुःख–सुख को व्यक्त करती है। काव्य में कवियों ने प्रकृति का आलंबन लेकर मानवीय भावनाओं को प्रदर्शित किया। भावना ही काव्य को उत्कर्ष पर लाती है। अतः साहित्य मानव ह्रदय की गूढ़ अनुभूतियों का संगम है।

छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में समाज के पहलुओं को स्पर्श करने का प्रयास किया। उन्होंने नारी के आदर्श रूप को स्थापित किया। प्रकृति को नारी रूप में भी चित्रित किया। छायावादी काव्य में प्रकृति की सत्ता को भी सर्वोपरि माना गया है। छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में रहस्यपरक उद्भावना में भक्ति का भी समायोजन किया।

निष्कर्षतः छायावादी काव्य अपनी मौलिक उद्भावना में आधुनिक काल का 'स्वर्ण युग' ही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. संधिनी, महादेवी वर्मा, पृष्ठ–7, लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।
2.राग–विराग, निराला, पृ. – 119, लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–1
3.अपरा–निराला, पृ.–66, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002
4.राग–विराग–निराला, पृ. 131, लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।
5.अपरा–निराला, पृ. 55
6.संधिनी–महादेवी वर्मा, पृ. –108, लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–1
7.कामायनी–जयशंकर प्रसाद, पृ.–26, कमल, नई दिल्ली, 110002
8.तारापथ – सुमित्रानंदन पंत, पृ.–84, लोकभारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।
9.तारापथ–सुमित्रानंदन पंत, पृ. 121

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net